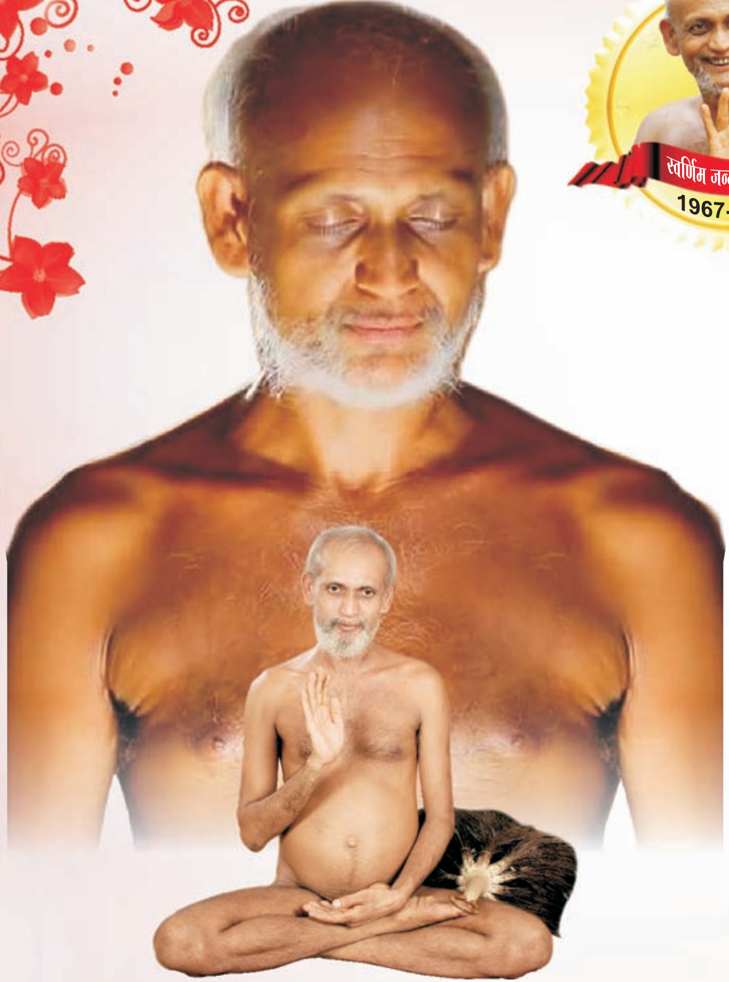

अभीक्षण ज्ञानोपयोगी परम पूज्य
आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज के
'स्वर्ण जयंती वर्ष' के उपलक्ष्य में

स्वर्ण जन्म जयंती महामहोत्सव

प्रकाशक - अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन, मंडौला, गाजियाबाद

पावन प्रसंग

प.पू. आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज के स्वर्णोदय महोत्सव (50वें जन्मोत्सव) के उपलक्ष्य में प्रकाशित

कृति	:	स्वर्ण जन्म जयन्ती महामहोत्सव
आशीर्वाद	:	प.पू. अभीक्षण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
रचियता	:	ऐलक श्री 105 विज्ञानसागर जी महाराज
प्रेरणा	:	क्षुल्लिका श्री 105 निर्वाणनन्दनी माताजी (ब्र. केशर बाई)
सहयोगी	:	ब्र. नन्दनी दीदी (ज्योति दीदी) नागपुर, ब्र. ऋजुता दीदी (रानी दीदी) कारंजा
संस्करण	:	2017 (1000 प्रतियाँ)
मूल्य	:	25/- रुपये
प्राप्ति स्थल	:	प.पू. आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज (संघ) 7042206609
	:	अतिशय क्षेत्र जयशांति सागर निकेतन, मंडौला सम्पर्क : 9719323429, 9690042294
मुद्रक	:	वसुनन्दी ग्रॉफिक्स, दिल्ली मो. 011-65002127, 9958819046

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज के
साथ पूज्य गुरुदेव
ग्रीन पार्क, नई दिल्ली (2009)

सूर्य दिवाकर आप हो

वसुनन्दी आचार्य है, सर्व गुणों में नाम।
सिद्ध-श्रुत-आचार्य सहित, जिनको करूँ प्रणाम।।
धर्म धुरन्धर आप हो, इतिहासों में नाम।
सब कुछ मिलता है यहाँ, मुझको मिल गए राम।।
धर्म ध्वजा फहरा रहे, आप गुणों की खान।
जो भी चरणों आत है, पाता है विश्राम।।
कृपा सिन्धु भी आप है, कल्पवृक्ष गुरु आप।
कामधेनु चिन्तामणि, हमें मिले श्री आप।।
जन्म जयंति मना रहे, पूज्य पुरुष है आप।
जैन धर्म बतला रहे, संत शिरोमणि आप।।
नील गगन है आप ही, ध्रुव तारा भी आप।
एक बार जिसने लखा, दिव्य ज्योति हो आप।।
सूर्य दिवाकर आप हो, चंद्र चाँदनी आप।
चंदन सी खुशबु मिली, आप हरे परिताप।।
''जयकीर्ति '' साधक बना, कृपा रही है आप।
चरण आपके पूजते, कट जाते अभिशाप।।

-मुनि जयकीर्ति, बम्बई

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज
बौलखेड़ा (2014)

श्रुत आराधक ज्ञान दिवाकर

गुरुवर की मीठी वाणी सुनकर,
लाखों प्राणी पार हुये हैं।
ज्ञानामृत का पान कराते,
गुरुवर ऐसे संत हुये हैं।
आता शरणा में जो भी इनकी,
धर्मश्रवण कर भव्य हुये हैं,
श्रुत आराधक ज्ञान दिवाकर,
वसुनन्दी जी संत हुये हैं।

–मुनि शिवानन्द
21-9-2017

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2013)

ज्ञानसूर्य ये संत है

ज्ञानोपयोग में लीन रहें जो,
संत प्रवर ये गुरुवर कहाते।
ज्ञान की ज्योति से जीवन चमका,
ज्ञानसूर्य ये संत कहाते।
मोक्षमार्ग दिखलाने वाले,
परमोपकारी गुरुवर कहाते।
ज्ञानध्यान तप में जो रहते,
वसुनन्दी जी गुरुवर कहाते।

-मुनि प्रशमानन्द

24-9-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री आनन्दसागर जी महाराज
ग्रीन पार्क, नई दिल्ली (2009)

मंगलाचरण

सम्यग्दर्शन बोधवृत्तकुशलं
धर्मस्य संवाहकम्,
सिद्धान्तस्य समस्ततत्वनिपुणं
श्री शारदाया: सुतम्।
बाह्याभ्यंतर सर्व संग रहितं
कल्याण बल्लिं सदा,
आचार्य वसुनंदि पाद युगलं,
वंदे त्रिधा भक्तित।।
सिद्धांत चक्री गुरुदेवा विद्यानंदस्य
शिष्यं वसुनंदि सूरिम्।
संसार तापं रामनोद्यतं तं वंदे सदा
निर्मल शीत रश्मिं।।

आर्यिका श्री वर्धस्व नंदिनी माता जी
संघस्थ :- आ. श्री वसुनंदी जी मुनिराज
26/9/2017

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री दयासागर जी महाराज
बण्डा (1998)

गुरुदेव तुम्हें प्रणाम

वसुनन्दी आचार्य श्री जी विश्व जगाने आये हैं
हृदय करोड़ों बस गए ऐसे, इतिहास जगाने आये है।
सूरज-चांद गगन में चमको, सबको मार्ग दिखाओं तुम,
जिओ सवा सौ वर्ष गुरु जी, धर्म ध्वजा फहराओ तुम।।1।।
धर्म की ज्योति जगाई गुरुवर करूणा सदा बिखेरी है,
संत हृदय नवनीत तुम्हीं हो, फिर अंधकार न देरी है।
आचार्य श्री जी विद्यानन्द है, सबको भाग्य जगाओ तुम,
जिओ सवा सौ वर्ष गुरु जी, धर्म ध्वजा फहराओ तुम।।2।।
ऋजुता की हो मूरत गुरुवर केसर की बगिया में
ज्ञान-विज्ञान के फूल खिले हैं, आज तुम्हारी बगिया में।
मेरे तो राम रहिमा,
सौम्य छवि दर्शाओं तुम,
जिओ सवा सौ वर्ष गुरु जी,
धर्म ध्वजा फहराओ तुम।।3।।

-ऐलक श्री विज्ञानसागर जी, मंडौला
5/10/2017 (गुरुपूर्णिमा)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज
कुंदकुंद भारती, नई दिल्ली (2009)

गुरु अष्टक

श्री जिन शासनं तीर्थं वंदे तस्य च प्रेरकम्।
चेतना चेतने तीर्थे ज्ञाना रोग्य सुदाय के।।
ज्ञान ध्यान तपो लीनं, नाना भाषा विशारदम्।
वसुनन्दी गुरुं वंदे, सर्व विद्या विशारदम्।।
तपोनिधिं नमस्कृत्य प्रणम्य ज्ञान भास्करम्।
वसुनंदि गुरुं सम्यगर्पयामीह जीवनम्।।
वसुनन्दी गुरुं वंदे क्षपकोद्धारकं सदा।
सर्व दु:ख मपाकृत्य सुसमाधि-विद्यायकम्।।
जम्बूस्वामी तपोभूमि-क्षेत्रोद्धारक-तारकम्।
वसुनन्दी गुरु श्रेष्ठं सिरसा प्रणमाभ्यहम्।।
श्री जिन शासनं तीर्थं, प्रेरकं संघ नायकम्।
वसुनन्दी गुरुं वंदे, विश्व शांति-सुदायकम्।।
प्रफुल्ल वदनं वंदे स्वभावे निरतं सदा।
वसुनंदि गुरुं दुष्ट्वा किन्न तुष्यंति मानवा:।।
समता-सौख्य-सारल्यं, प्रज्ञा-बोधि-समाधिच।
मोक्षोऽपि क्रमशस्सदा, गुरु भक्त्या हि प्राप्यते।।

-बा. ब्र. डॉ. प्रज्ञा दीदी
संघस्थ : आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री चैत्यसागर जी महाराज
मथुरा (2014)

जय वसुनंदि जय यतिसंघ

श्रमण संस्कृति के पूज्य उन्नायक
विद्यानंद के प्रियवर शिष्य।
ऋषभचंद्रपितु मात त्रिवेणी,
नयन दुलारे गुरुवर पूज्य।
ब्रह्मचर्य की असि धार पर,
कदम बढ़ाये शिवपुर पथ।
तज आडम्बर हुये दिगम्बर,
संयम साधन आतम हित।
जिनशासन ध्वज दिगदिगन्त में,
मधुर वाणी वीणा वादन।
श्रीजिनवर के प्रियनंदन हो,
भव्यजनों को करे पावन।
वीरा वाणी अमर देशना,
करें भविकगण अमृत पान।
स्वर्णिम वर्ष महोत्सव बेला,
जय वसुनंदि-वंदन दीवान।

-प्रतिष्ठाचार्य पवन दीवान, मुरैना

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज
सागर (1995)

तुम्हें मुबारक

राह के कांटे हरा रहे हैं,
सन्मार्ग सभी को दिखा रहे हैं।
जैन जगत के पूज यसंत हो,
बुझे दीपक जला रहे हो।।
खुशियां देखों घर-घर छाई,
फूलों ने सम्मान किया।
तुम्हें मुबारक जन्म दिवस हो,
सूरज ने अरमान दिया।।
गुणगाथा को सृष्टि गाती,
कई भक्तों के नयन बसें।
'रमाकांत' विनयांजलि है,
वसुनन्दी से भाग्य जगें।।
हाथ जोड़कर विनती करें,
दिल्ली का मानों भाग्य जगा।
जहां आपके चरण पड़े हैं
मानों वहीं से कष्ट भगा।।

-रमाकांत त्रिपाठी, होसंगाबाद
13/9/2017

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री धर्मसेन जी जी महाराज
दिल्ली (2011)

आप जिओं हजारों साल गुरुवर

चलो मन दिल्ली शहर के लिए
दो वक्त सुकून ले, कहर के लिए।
सुना है गुरु का जन्म दिन आया है,
धरती आकाश-चांद तारों ने मनाया है।।
गगन में जितने तारे हैं, उतनी खुशियां मिले आपको,
मैं क्या गीत गाऊँ, आप ही मिटाते मेरे ताप को।
आपकी दुआ का असर भी, हमारे दिलों-दिमाग में है,
आप जिओ हजारों साल, खुशी हमारे दामन में है।।
सजदा किया हूं आपका, ख्याबों में बस गये हो,
आपकी पग रजों में, इतिहास गढ़ गये हैं।
फानूस बनके खुदा, जिसकी हिफाजत करें,
वो क्या चाहेंगे दौलत, खुदा उनकी नसीयत करें।।

-दीपक जैन
कालीकट, केरल

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

गुरु मेरे कौशल खिवैया

गुरू के वचनों ने जगती का कैसा रूप निखारा है
मन, क्रम, वचन, त्याग, तप सेवा देकर हमें निखारा है।
भव सागर के ऊहापोह में भटक रही मन की नैया
गुरू मेरे हैं कुशल खिवैया, जग से पार उतारा है।
काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ जैसे असुरों ने था घेरा
तीर ज्ञान का छोड़ा गुरु ने मन्मथ को संहारा है।
परिजन, पुरजन सबको छोड़ा गुरू चरणों में मन लागा है
तुमने दीक्षा देकर मुझको भववारिधी से तारा है
जिनवाणी का वाचन पगले सोच- समझ कर तू करना
लाखों ने दर्शन -अर्चन कर अपना जनम सुधारा है।

-रमा सिंह,
ग़ाजिय़ाबाद

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी महाराज
धारुहेड़ा (2009)

अभीक्षण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री सुरदेवसागर जी महाराज
फरीदाबाद (2014)

चल पड़े कदम

चल पड़े कदम मुक्ति पथपर,
अब रुकने का काम नहीं।
राग द्वेष और मोह के घर में,
क्षण भर भी विश्राम नहीं।
बढ़ रहे निरन्तर कदम लिये,
वे सिद्धालय ही जायेंगे।।1।।
निश्छलमन के श्रेष्ठ संत है,
जल्दी मुक्ति पायेंगे।
वे कर्म शत्रु को जीत सके,
यही कामना है मन की।
युग युग तक जयवंत रहे,
आचार्य श्री वसुनंदी जी।।2।।

-चंद्रसेन जैन (भोपाल)

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज
जयपुर (2015)

आप कोहिनूर हो

आसमां ने जमीं को, क्या ना दिया-2
चांद-सूरज उतारें, गजब कर दिया।
आसमां.....

आप दुनिया के सच्चे ही, कोहिनूर हो,
आप चलते-चलाते, खुदा नूर हो
बात-बातों में हमने, यकी कर लिया।
चांद-सूरज.....

आप सबके दिलों में, ऐसे बसे
जैसे राम और रहीम के दिल में बसे
आप धरती पे जन्मे, मजहब कर दिया।
चांद-सूरज.....

सारी दुनिया को, पैगाम देते हो तुम
जैन संतों में नाम, लिखाते हो तुम
वसुनन्दी हो तुम, इक सबक कर दिया।
चांद-सूरज.....

-अमर 'अमरेन्द्र' झांसी, म.प्र.

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री सौभाग्यसागर जी महाराज
ग्रीन पार्क, नई दिल्ली (2016)

धन्य-धन्य हे गुरुवर

विषयों के कांटों से बचकर,
समय सुमन खिलाया है।
भोगों की दुर्गंध दूर कर
त्याग सुवास को पाया है।।
धन्य-धन्य हम पंचम युग में,
ऐसे गुरु को पाया है।
जिनके तप चरित्र तेज से,
सूरज भी शरमाया है।

-भजन सम्राट रूपेश जैन

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री कंचनसागर जी महाराज
तिजारा (2009)

वसुनन्दी मुनिराज

शब्दों में गीता का, सार देखा है।
लेखनी में सरस्वती का, विस्तार देखा है।
क्यों नहीं देखा उन्हें, अन्तर्मन से।।
मैंने धरती पर उनको,
राम का अवतार देखा है।
राम नहीं देखे धरती पर,
राम का पैगाम देखा है।
वसुनन्दी मुनिराज में,
जीवन का सार देखा है।
गले मत लगाओं,
इन ईंट चूने के मकानों को,
फिर ऐसे संत नहीं सुनते,
देखो हमारे कानो को।।

–मुकुल ''राही'' पाण्डे, दरभंगा, बिहार

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

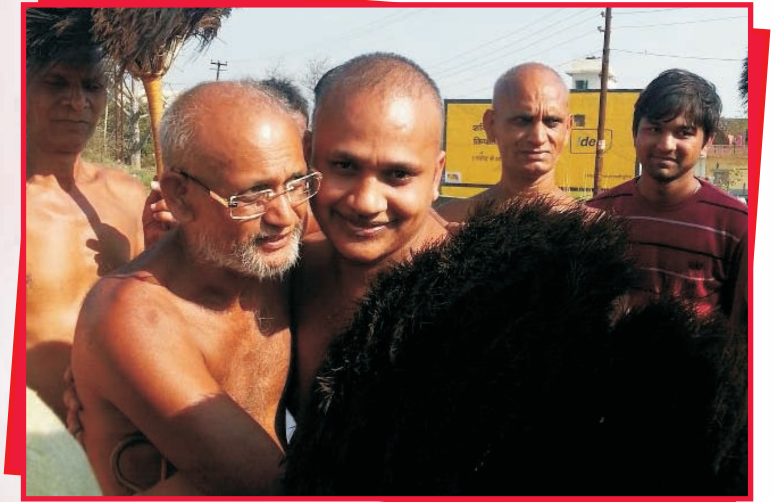

पूज्य गुरुदेव के साथ
आचार्य श्री शशांकसागर जी महाराज
जयपुर (2015)

वात्सल्य के सागर है

वात्सल्य के सागर हैं गुरुदेव वसुनंदी।
ज्ञान की गहरी गागर हैं गुरुदेव वसुनंदी।
संकट हर ले जाते हैं गुरुदेव वसुनंदी।
जब जब भी मुस्काते हैं गुरुदेव वसुनंदी।
गुरुदेव का संग ज्यों कक्षा हो
तन की और मन की।
आतम में सौरभ भर दी हो
जैसे हर उपवन की।
वर्तमान के वर्धमान है गुरुदेव वसुनंदी।
हर उलझन का समाधान हैं गुरुदेव वसुनंदी।

- सौरभ जैन सुमन (मेरठ)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
एलाचार्य श्री अतिवीर जी महाराज
दिल्ली (2014)

वसुनन्दी मुनिराज

वरदहस्त जिनवाणी माँ के, आगम के अवतार हो।
सुकवि, लेखक, प्रखर, प्रवक्ता, सचमुच मूलाचार हो।।
नंदन हो लघुनंदन तुम, श्री वर्धमान महावीर के।
दीप शिखा हो ज्ञानदीप की, रत्न त्रिवेणी क्षीर के।।
मनन और चिंतन मंथन से, मीठे प्रवचन को घोल।
हार न माने परीषहों से, हित-मित-प्रिय वाणी बोल।।
राग नहीं है किसी वस्तु का, आप अलौकिक संत हो।
जन जीवन के पतझड़ में गुरु, सचमुच आप वसंत हो।।

-डॉ. कमलेश जैन 'बसंत'
तिजारा, राज.

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी महाराज
तिजारा (2009)

कमाल का अंदाज

कमाल का अंदाज देखा है, आपकी हर अदाओं पे
अजब सा सुरूर देखा है, आपकी दुआओं में।
हुनर पे हुनर है, कमाल की मिसाल है आपकी
तपस्या की बेड़ियाँ, अभिशाप की काटते
दुनिया में रहते, दुनिया से बे-खबर है
तुम्हें सब पता है, जाना किधर-किधर है।
बे-लोस बन्दा हूँ, खुदा की इबादत में
आप सलामत रहे, खुदा की निगाहों में
वो महफूज रखे, हर नजर से आपको
आप पैगाम्बर हो जैनों के,
नजर भी बसे नजराना आपके

-अहमद सागरी
सागर (म.प्र.)

अभीक्षण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
उपाध्याय श्री नयनसागर जी महाराज
श्रीनगर उत्तरांचल (2003)

जन्म जयन्ती पर

कौन कहता संतों में प्रभाव नहीं होता
संतो की वाणी में है, देह में नहीं होता।
पत्ता-पत्ता उनकी कृपा से हिलता है
वाणी में जादू है, तभी तो मिलता है।।

जन्म जयंति मना रहे है, खुशी के दीप जलाओं तुम,
घर आंगन को पूरो मिलकर, रंगोली में गाओं तुम।
कर्ज उतारा मात-पिता का, वाह गुरु का नाम मिला,
कमाल करते आप गुरुजी, सब संतों में नाम मिला।।

विज्ञान सागर का मिला संदेशा, कलम उठी है हाथों में,
पता नहीं क्या लिखना हमको, तस्वीर दिखी है आँखों में।
पुरखों का पुण्य मिला तुमको, आसमान के तारा हो,
करों उजाला वसुनन्दी बन, सबको आप सहारा हो।।

-प्रकाश सिंह पुरन्दर, अम्बाला

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री सकलकीर्ति जी जी महाराज
जयशांतिसागर निकेतन, मंडौला (2012)

हे गुरुवर वात्सल्य आपका

गुरुवर वात्सल्य आपका
अतुलनीय सागर जैसा
आपसे हमको प्यार मिला
वो कहीं नही पाया
जैसाचरण शरण मे आने वाला
धन्य सुपावन होता है
जिसे हसाया तुमने गुरुवर
वो फिर कभी ना रोता है

-प्रशांत जैन, जबलपुर

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री सुधासागर जी महाराज
टूण्डला (2012)

क्या कमाल है

गगन से धरती को झांका, संतों में आपको आंका,
फूलों सी मुस्कान देखी, सोने सी धरती देखी
नदियाँ से बहता देखा, सागर सा गहरा देखा
क्या कमाल है आपकी वाणी में,
हमने तो जिनवाणी देखा।।
सूरज सा ताप नहीं है, चन्द्रा सा दाग नहीं है
न्याय को कसौटी देखी, अंधेरे में रोशनी देखी,
जिनके गीत चमन गा रहे, धरती पे है गगन छा रहे
सूरत भी भोली भाली है, फिर भी शक्तिशाली है।।
विद्यानंद के शिष्य आप हो, करूणा के अवतारी हो।
जिनशासन के अग्र दीप हो, मानवता के पुजारी हो,
रूकना नहीं चलना है तुम्हें, झुकना नहीं बढ़ना है तुम्हें
बढ़ते रहो-बढ़ते रहो, मुक्ति की राह पर चलना है तुम्हें

-आशुतोष मकरन्द, आगरा (उ.प्र)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री समतासागर जी एवं मुनिश्री प्रमाणसागर महाराज
हस्तिनापुर (2004)

जग घूम आया

तर्ज - नव वो अंखियां रूहानी कही, ना वो चेहरा नूरानी कही (सुलतान)

तेरा नूर नुरानी लगे, जैसे मन के है दीप जले।
महिमा वसुनन्दी तेरी, गाऊं गुण तेरे हर जगह
पहना दिगम्बर गहना, जग घूमया थारे जैसा ना कोई
जग घूमया थारे जैसा ना कोई।
विद्यानंद गुरुवर के शिष्य मतवाले है,
वसुनन्दी मेरे गुरुवर जग से निराले हैं
एक पुचकारी..........................
एक पुचकारी से ये कष्ट हर लेते हैं
खुशियाँ जमाने भर की पल में ये देते हैं।
इस दर पे कमी नहीं,
इस दर से तो मांगे सभी सच्चे मन से जो मांगे
यहाँ खाली जाये ना वो कभी खाली तू जाने दे कभी ना.
भक्तों कि तेरे दर पे लगती कतारें है,
सुबह शाम आरती कर तुमको निहारे है।
अष्ट द्रव्य थाल...............
अष्ट द्रव्य थाल लेकर भक्त यहाँ आयें हैं
तुमको ही पूजते है दर्श तेरा पायें हैं,
तू ही भाग्य जगाने वाला, तू ही रोतों को हंसाने वाला
तुम्हें देखके दुख टले, तू ही कष्ट मिटाने वाला
चरणों में अंबर जीतू है ना.

-पारस अंबर, दिल्ली

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनि श्री भव्यसागर जी महाराज
बण्डा (1996)

जन्मदिन का अवसर आया

फूलों की कलियों जैसा, श्रृंगार आपका
सूरज की रोशनी सा, नाम आपका
स्वागत करते वसुनन्दी का, नील गगन के तारे भी,
पूछ रहे अमावस में, मिलके आज सितारे भी
कहो किसका जन्मदिन है, किसकी खुशियां मना रहे हो,
वृक्षों ने कहा कोयल से, खूब सजाया घर आंगन को,
किसका आनन्द उठा रहे हो। फूलों ने कहा खुशबे से,
वृक्षों ने कहा हवा से, हकीम ने कहा दवा से
धरती ने कहा क्षमा से, गिरिवर ने कहा गर्मी से
धूप ने कहा छांव से, शहर ने कहा गांव से
आज हमारे गुरुवर का, आज हमारे ऋषिवर का
जन्म दिन का अवसर आया है।
घटा ने जयकार लगाया है, यही तो खुशी का पैगाम है
वसुनन्दी ही उनका नाम है, यह हृदय बड़ा विशाल है
सालों में भी साल लिखा तो, यह सत्तरह का साल है।।

–अरविन्द शास्त्री, कलकत्ता

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री शिवसागर जी एवं ऐलक श्री विमुक्तसागर जी महाराज
बटेश्वर (2005)

शुभ नाम जिनका वसुनन्दी

जैन जागृति का पाठ पढ़ाने निकल पड़े,
जिन धर्म का प्रसार करना मिजाज है।
वाणी में मधुरता और शांति चित्त व्यवहार
शैली है निराली और निराला अंदाज है।
समाज को नई ऊंचाईयां दिखायीं जिनने
सब के दिलों पर जिनका एकछत्र राज है।
चरणों में नतमस्तक दिन-रात रहूं उनके,
शुभ-नाम जिनका वसुनंदी मुनिराज है।

-अनुज कुमार जैन, बड़ौत

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री अरुणसागर जी महाराज
फरीदाबाद (2016)

जैन धर्म - आदर्शों की खान

ब्रह्मचारी, शाकाहारी, सर्व हितकारी है
सत्य और अहिंसा के,ये रक्षक और पुजारी हैं।
नहीं कोई दोष है और नहीं कोई मान है ।
मानवता के सारे गुण तो इसके महान है ।
दया करो जीवों पर, जीवों को भी प्यार दो ।
अपने- अपने हिस्से का कुछ, अंश इन पर वार दो।
आदर्श हैं ऊँचे इनके, भोग -विषय त्याग कर ।
मानव सेवा, तपस्या,और नम्रता से राग कर ।
सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र है ।
मोक्ष प्राप्ति के मार्ग ,तीनों ही पवित्र है ।
त्रिरत्न, पंचव्रत, उपासना और ध्यान है ।
कर्मवाद, आत्मज्ञान, अमरता पहचान है ।
जातिवाद, छुआछूत, न कुरीति का नाम है ।
पुनर्जन्म आत्मा का, नारी का सम्मान है ।
आदिनाथ प्रथम तीर्थ, चौबीस वर्धमान है ।
जैन धर्म मानवता के आदर्शों की खान है ।

-कवि बुद्धि प्रकाश महावर मन
अध्यापक राजकीय प्रा वि गुगोलाव,लवाण,दौसा

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री सुभद्रसागर जी महाराज
जयशांतिसागर निकेतन, मंडौला (2011)

अन्वेषक श्रमण आचार्य वसुनंदी'

जिनकी पिच्छिका पत्थर में,
कांचन सी चमक भर दे।
जो शिव विज्ञान प्रशमानंद....
मुनिवर संघ को रच दे।।
जिनके संघ में वर्धस्व नंदिनी, सी हो मातायें।
उस निर्ग्रन्थ गौरव की, सभी नित वन्दना गायें।।
अन्वेषक श्रमण, आचार्य वसुनंदी, परमयोगी
तपोनिधि, तीर्थउद्धारक, अभीष्ण ज्ञान उपयोगी।।
है प्राकृत में परम ज्ञाता वो-चेतन के संजय प्रहरी
रहे उपकार हम सब पर, यही है भावना मेरी।।

-साहित्यकार
डॉ. प्रभाकिरण जैन, नई दिल्ली

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

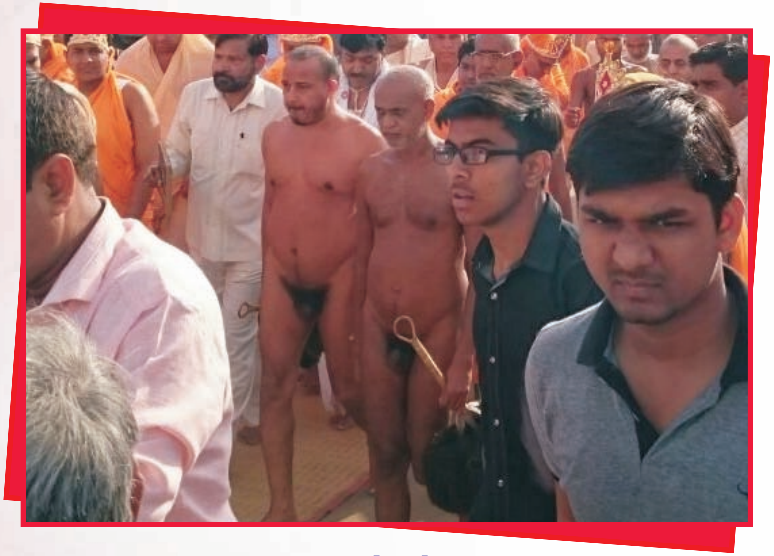

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री सौरभसागर जी महाराज
बलबीर नगर, दिल्ली (2016)

गुरुवर मेरे आये है

रोली महकी देखों घर-घर, दीप जले है द्वार-द्वार पर।
शाख-शाख पर पत्ता झूमा, देखें गुरुवर आये द्वार पर।।
कोयल आयी आम देखकर, सूरज निकला गगन देखकर।
चंद चांदनी देख रही है, नील गगन से पूछ-पूछकर।
देखे गुरुवर....

तूफानों में दीप जला दो, मुझको मेरा पता बता दो।
कहां बसे वसुनन्दी जी, आओ तारे उन्हें पूछकर........
देखो हिम्मत कहाँ से आई, कहाँ से मैंने शक्ति पाई।
जन्म जयंति मना रहे, जन-जन आते इन्हें देखकर।।
देखे गुरुवर....

-किरण तिवारी ''सरगम'',
अहमदाबाद (गुजरात)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री पुलकसागर जी महाराज
भोलानाथ नगर, दिल्ली (2016)

कृपा बरसती है दिन-रात

भूलकर भी हम आपको भूल पाते नहीं,
ख्यालों में आते हो, मगर आ पाते नहीं।
हमारी मुश्किल ही हमारी, नसीयत बन गई है,
आपकी दुआ ही हमारी, वसीयत बन गई है।।
हमने तुम्हें जब-जब देखा,
बस देखा है, पूछा नहीं,
लेन-देन का रिश्ता ही नहीं रखा
अपने पराये का सोचा ही नहीं,
आपकी कृपा बरसती है दिन रात
फिर मांगने का भाव मन में आता ही नहीं।।

-महेन्द्र अभागा, बीना (म.प्र.)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री सत्यसागर जी महाराज
तिजारा (2006)

जैन मुनि और जैन धर्म

दुनिया का अनमोल खजाना हमको इसमें मिलता है !
सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य का कमल इसी में खिलता है!!
सात तत्वों का वर्णन करने वाला धर्म अनूठा है
दया सभी पर प्रेम सभी से नहीं किसी से रूठा है
जिन के राही श्रेष्ठ सभी है जीवन कांटो वाला है !
गुरु शिष्य की परंपरा को निज जीवन में ढाला है !!
अन्य सभी धर्मों से बढ़कर जैन धर्म कहलाता है !
सभी धर्म का पालन करना हमको ये सिखलाता है !!
जैन मुनि सच्चे होते हैं जीवन पथ के रखवाले !
सत्य अहिंसा त्याग धर्म पर ये होते चलने वाले !!
नहीं किसी से द्वेष पालते वाणी रखते सदा नरम !
सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य पर चलकर मिटते झूठ भरम!!
सर्दी गर्मी बरसातों में बने दिगंबर घूम रहे
अपने सत्कर्मो से देखो मुनि जो अम्बर चूम रहे
गुरु शिष्य की परंपरा को जीवन में चमकाया है !
जैन मुनि ने जैन धर्म को दुनिया में महकाया है !!

-कृष्ण कुमार सैनीराज दौसा, राजस्थान

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री प्रमुखसागर जी महाराज
अहिच्छत्र (2013)

सब संतों में बड़े महान

वसुनंदी गुरु वाणी आपकी, करती जगत कल्याण।
शब्दों के कलशों से छलके, आगम अमृत ज्ञान।।
गूढ़ गहन आगम सिंधु से, घट भर-भरत कर लाते।
ज्ञान पिपासु भक्त जनों को, ज्ञान सुधा पिलवाते।।
शास्त्रों का सौंदर्य बढ़ाते, गुरु तेरे व्याख्यान।
वसुनंदी को देखा हमने, सब संतों में बड़े महान।।

-रूपाली जैन
(मधुर गायिका)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

ये दिगम्बर गुरु है

गुरुवर वसुनंदी जी हमको महावीर से लगते हैं
एक नजर जिस पर कर देते उसके भाग्य तो जगते है
जहाँ चरण रख देते गुरुवर कमल वहाँ खिल जाते हैं
सारे प्रश्नों के उत्तर भी सहजता से मिल जाते हैं
कठिन परिषह सहते गुरुवर नहीं एक पद डिगते हैं
एक नजर जिसपे कर देते उसके भाग्य तो जगते है ।
आपका प्रवचन ऐसा लगता ज्ञान का जैसे सावन है
आपकी छाया में जो रहते कर्म उन्हें नहीं ठगते हैं
एक नजर जिस पे कर देते उसके भाग्य तो जगते हैं

-नन्दकुमार जैन
गायक गीतकार संगीतकार
651 शिवनगर कालोनी जबलपुर (म.प्र.)

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनि श्री पंचकल्याणकसागर जी,
मुनि श्री विमलेश्वर जी महाराज
मुनि श्री शिवसागर जी महाराज, बटेश्वर (2005)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

गुरु का हाथ हो सिर पर

गुरू का हाथ हो सिर पर बलाएं आ नहीं सकती
गमों की यह घटा काली कभी भी छा नही सकती
गुरू पर आस्था रखना सुनो तुम ऐ जहाँ वालों
खड़ी हो मौत दर पर भी कभी ले जा नही सकती
गुरू तकदीर लिखते है गुरू ही पीर रहते है
गुरू सागर के खारेपन को मीठा नीर करते है
गुरू करूणा दया और प्रेम की खुशबू लिये दिल में
वो हिंसक शेर को मानव बना महावीर करते है

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री सुरत्नसागर जी महाराज
कामां (2016)

-सुनील समैया
हास्य कवि, मंच संचालक
(काका हाथरसी सम्मान प्राप्त) जिला सागर

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री विभंजनसागर जी महाराज
राधेपुरी, दिल्ली (2016)

स्वर्ण महोत्सव

स्वर्ण महोत्सव है गुरुवर का आओ मिल के मनाये
हम है लोहा आप हो पारस छू हम भी सोना हो जाये
रत्नत्रय ये रूप आपका मन को हमारे भाये
शरण आपकी छोड़ के गुरुवर और कही न जाये
पथरीले रहते है और कांटे फैले राहों में
गुरुवर हमारा जीवन है अब आप के ही हाथों में
लिख न पाऊँ मैं शब्दों में गुरुवर की महिमा को
शत शत वंदन करती हूँ आपके पावन चरणों को

-बबीता झांझरी, दिल्ली

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

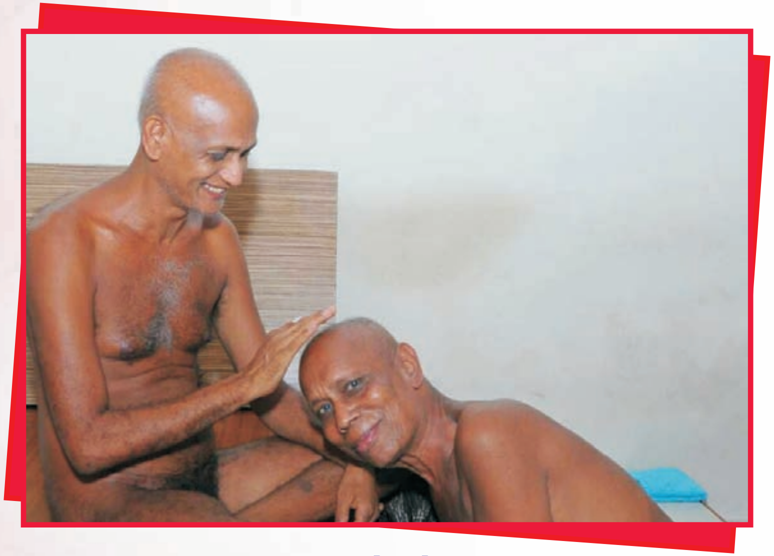

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री विज्ञानसागर जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

हे गुरुवर

हम चरणों के दास है - गुरुवर,
हमें आसरा तेरा है
बस तेरी भक्ति में अर्पित,
जीवन अब तो मेरा है
तेरे हाथों सौप दी हमने,
जीवन की ये नांव
गुरुतुम जैसा मांझी है तो
तूफानों से क्या मै डरूं

-प्रीति जैन, जबलपुर

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

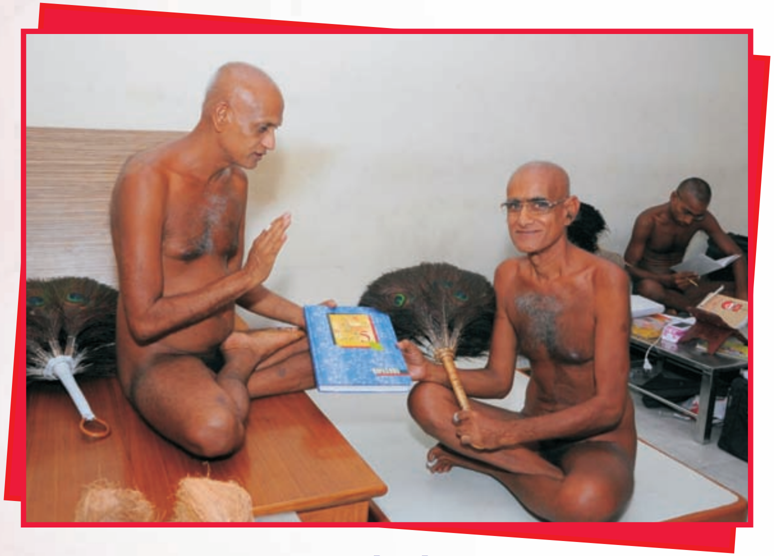

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री ज्ञानानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

विद्यानंद के शिष्य बने

जिनके पग की माटी देखो,
चंदन सी हो जाती है।
जब भी बैठा लिखने गुण को,
बुद्धि भी खो जाती है।
इनके गुण को लिखने वाला,
गुणवानों में श्रेष्ठ बने।
जैन धर्म के महागुरु हो,
विद्यानंद के शिष्य बने।।
इनके चरणों वंदन मेरा,
एक नहीं वो लाखों हो।
तुम भी इनका वंदन कर लो,
और उठा दो हाथों में

-आशीष पंडित, सीतापुर

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

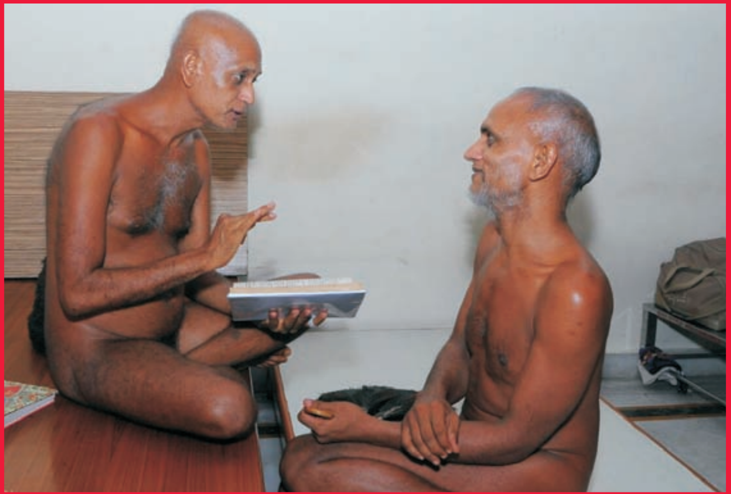

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री जिनानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

आस्था का दीप

गुरुवर आपकी वाणी में जादू हैं,
जो सुन लेता है वहीं साधु हैं
आप असीम सागर की तरह गहरे है
जो बिखेर दे खुशबु वो आप पहरे है
आचार्य वसुनन्दी जी महाराज का कोई जवाब नहीं है
जिसका न हो अध्ययन, ऐसी कोई किताब नहीं है।
आप करुणा के सागर, आस्था के दीप हो,
जिसमें है संयम के मोती, ऐसे आप सीप हो।
चर्या और चर्चा के आप खजाने हो,
प्राकृत और संस्कृत के आप दीवाने हो
तुम्हें दूं कोई उपमा, ऐसा कोई खिताब नहीं है
जिसका न हो अध्ययन, ऐसी कोई किताब नहीं है।

–सुमित जैन, दुबई

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री आत्मानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

अक्षर शिल्पी तुम हो गुरुवर

दर्श तुम्हारा गुरूवर मेरे, जीवन के संकट हर लेता ।
चरणों का सानिध्य तुम्हारा, चंदन सी शीतलता देता ।।1।।

संयम की साकार मूर्ति तुम, सरस्वती के वरद पुत्र तुम ।
अज्ञान मिटाता वचन तुम्हारा, कुन्दन सी निर्मलता देता ।।2।।

महावीर के पथ गामी तुम, मोक्ष मार्ग के राही हो ।
निर्मल है चारित्र तुम्हारा, वन्दन सी पावनता देता ।।3।।

हम सब की.आँखों के तारे, विद्यानन्द.जी गुरु तुम्हारे।
प्रवचन में अमृत का झरना, मन का सब कालुष धो देता ।।4।।

अक्षर शिल्पी तुम हो गुरुवर, शब्द शब्द मे बसे हो मुनिवर ।
साथ तुम्हारा भक्तजनों को, नन्दन वन सी सुरभि देता ।।5।।

वसुनन्दी आचार्य हमारे, सबको है प्राणों से प्यारे ।
मीठा प्रवचन गुरू तुम्हारा, दु:खों से मुक्ति कर देता ।।6।।

-श्रुति जैन, झज्जर हरियाणा

जन्मदिन आ गया इनका

उठा जो हाथ गुरुवर का,
उसे वरदान कहते है,
मिटा दे मन की पीड़ा को,
उसे अरमान कहते है
जन्मदिन आ गया इनका,
खुशी के गीत गाओं तुम
वसुनन्दी तुम्हें लगते,
हमें भगवान लगते हैं।

–डॉ. उमा रानी, जयपुर

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री निजानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री संयमानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

हे गुरुवर

हे गुरुवर शिवपथ पर चलकर,
तुमने जो रूप संवारा है।
यह तीन लोक में अनुपम है,
और अन्य न सुख का दाता है।
इसलिए किरण बनकर गुरुवर,
हम सबको सदा जगाया है
जिनवाणी के कदमों पर चल,
मुक्ति का मार्ग दिखाया है
तुम सचमुच ही अमृत लेकर,
विषय वमन कराने आये हो
है जीर्ण रोग मम अस्थि में,
जिसकी औषध तुम लाये हो
पा करके विद्यानंद गुरु को,
तुम वसुनंदी कहलाये हो
है भाग्य सभी हम भक्तों के,
जो ऐसे गुरु हमने पायें है

-संगीतकार संजय जैन, एम्बेसी ग्रुप, दिल्ली

हे जिन शासन के चंदन

स्वर्ण जयंति बेला, अभिनंदन है अभिनंदन है।
पूज्याचार्य श्री वसुनन्दी जी,
चरणों में शत्-शत् वंदन।।
हे! जिन शासन के चंदन........।
गौतम गणधर से लगते हो,
जम्बूस्वामी हो गुरुवर,
समन्तभद्राचार्य से लगते,
कुन्दकुन्द स्वामी से गुरुवर।
श्री अकलंक देव से लगते,
श्री मानतुंग से गुरुवर,
भद्रबाहु से पुष्पदंत से,
भूतबलि से गुण अर्चन
पूज्याचार्य श्री वसुनन्दी जी,
चरणों में शत्-शत् वदंन।।

-विशु जैन 'देवबंदी',
गाजियाबाद

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री प्रज्ञानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री सहजानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

ये नाम किसी का मोहताज नहीं

सुनकर कोई अनुसुना कर दे
ऐसी इनकी आवाज नहीं,
जो न उतरे हृदय के अंदर
ऐसे इनके अल्फाज नहीं
ये जिन्दगी का सफर करते
वो भी मौन की साधना से
वसुनन्दी है नाम इनका
ये नाम किसी का मोहताज नहीं

–अजय दीक्षित, कानपुर

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री ध्यानानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

ये दिगम्बर गुरु है

लाख कांटे उगे तो, मुझे क्या हुआ,
जिंदगी का सफर है, ये हमने छुआ।
दुनिया वाले ये आजकल समझते नहीं,
ये दिगम्बर गुरु है, इनने मन को छुआ।
लाख कांटे उगे, तो मुझे क्या हुआ,
जिंदगी का सफर है, ये हमने छुआ।

–मुनि जयकीर्ति, बम्बई

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

गुरु चरणों में

विकारों के मल से मलिन है ये तन-मन,
गुरु चरणों में पाप धोने चले आइये।
देह और आतमा का भेद जानने के लिए,
आवरण कर्म यहां खोने चले आइये,
गुरुमुख से है ज्ञान का जो अमरित झरा,
तन-मन उसमें डुबोने चले आइये।
दुखों का गलन होगा सुखों से मिलन होगा,
नर से यूँ नारायण होने चले आइये।

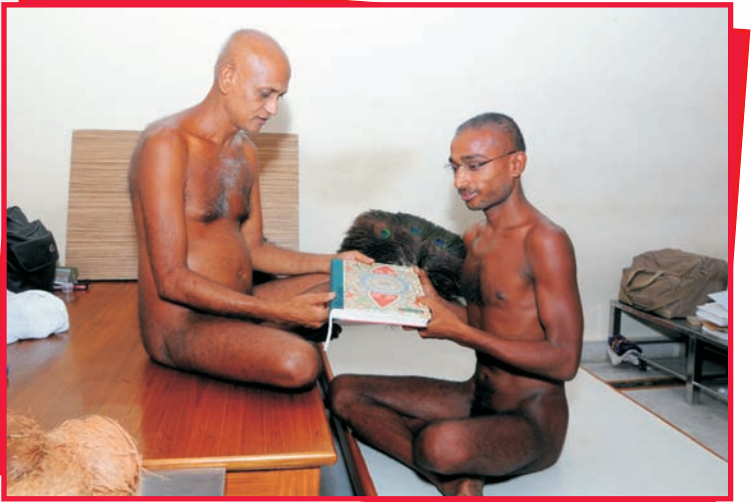

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री श्रद्धानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

–कवि नरेंद्रपाल जैन,
ऋषभदेव (केशरियाजी राज.)
(राष्ट्रपति से प्रशस्तिकृत कवि एवं साहित्यकार)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री शिवानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

मीठे प्रवचन करने वाले

मीठे प्रवचन करने वाले गुरु वसुनंदी जी की जय हो
भक्ति में लीन सभी जन हों और विश्व वसुनंदी मय हो
मधुर वचन वाले गुरु का अवतरण दिवस आया है
ऐसे गुरुवर के दर्शन को जन जन का मन ललचाया है
गुरु विद्यानंद राष्ट्रऋषि ने ये हीरा गज़ब तराशा है
इनका व्यक्तित्व ही दर्शाता सच्चे गुरु की परिभाषा है
निज का स्वरुप दिखलाने वाले गुरुदेव एक दर्पण हैं
ऐसे गुरुओं के चरणों में मेरा सर्वस्व समर्पण है

-कवियत्री नम्रता जैन
छतरपुर

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री प्रशमानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

गगन में तारे चमके

गगन में तारे चमके,
चंद्रमा ने चांदनी बिखेरी।
फूलों ने महका दिया,
लोगों ने खुशियां समेटी।
एक चांद गगन में रहता,
एक धरती पे आया है।
एहसास देता जिन्दगी का,
खामोश बनके आया है।
खुशबू बिखेरी जानों जहन में,
बागवां महका दिया।
वसुनन्दी के शुभागमन ने,
धरती अम्बर को मिला दिया।।

-अनिता अगारकर, नागपुर

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

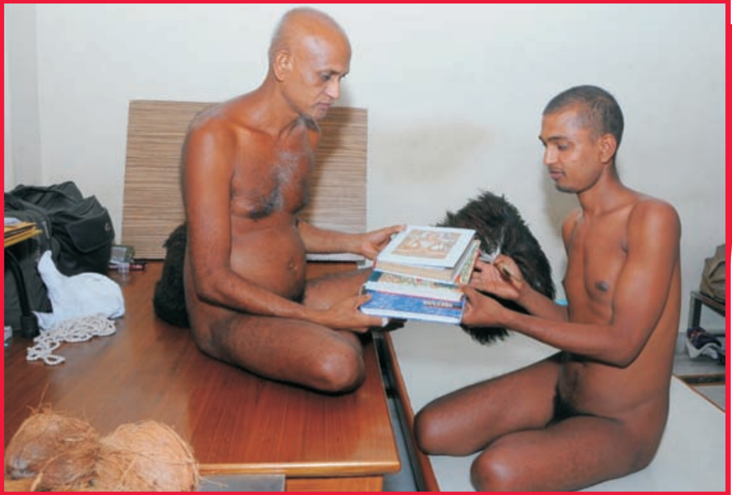

पूज्य गुरुदेव के साथ
मुनिश्री पवित्रानंद जी महाराज
कृष्णा नगर, दिल्ली (2015)

दिनेश से रवि

दिनेश रवि हैं आज सामने
बनके वसुनन्दी जी।
जिन आगम के पथदर्शी ये
लगते हैं तीर्थंकर जी।
राजस्थान का जिला धौलपुर
ग्राम विरोंधा प्यारा है।
जहां की मिट्टी पावन जिसने
गुरुवर सा ज्ञानी जन्मा है।
कॉमर्स विषय से शिक्षा पाई
लौकिक शिक्षा इन्हें ना सुहाई।
तब ओढ़ लबादा आत्मशुद्धि का
जिन शासन में लगन लगाई।
भिंड शहर की बात निराली
हमें तीर्थ से बढ़कर है
जहां हमारे पूज्य गुरु ने
मुद्रा ली शुद्ध दिगंबर है।

–आशीष जैन 'निशंक', सागर(मध्य प्रदेश)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

गुरु मंजिल दिया करते हैं

चमकते चांद से पूछो
उजाला क्यों दिया करते।
पतंग की डोर से पूछो
उड़ाने क्यों दिया करते।
सफलता हाथ देते हैं
कदम मंजिल दिखाती है।
कोई आवाज देता है
गुरु मंजिल दिया करते।

–मणिकांत मौर्य, हैदराबाद

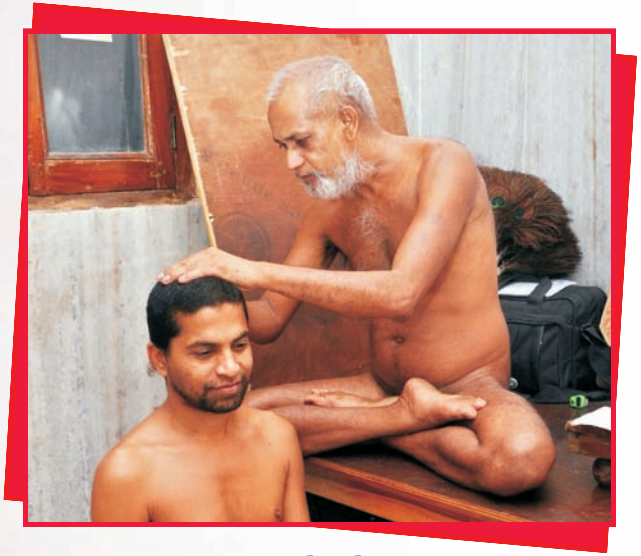

पूज्य गुरुदेव के साथ
क्षुल्लक श्री विशंकसागर जी महाराज
शंकर नगर, दिल्ली (2015)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
गणिनी आर्यिका श्री विशाश्री माताजी
जयपुर (2012)

इन्हें हम जैन कहते हैं

इंद्रियों को जीते उसे जैन कहते है
अहिंसा के निकट जैन रहते है
सयंमित जीवन जैन मुनि जीते है
संस्कार के गुण जिनवाणी मे बसते है
तपस्या से कर्म इनके जलते है
नैतिकता के चिह्न पे जो चलते है
फूल जिनकी वाणी मे मिलते है
सदी तक जो भक्तों के कर्मों में झलकते है
उन्हें महाराज वसुनंदी जैन कहते है

–आरती जैन

शिक्षा – स्नातकोत्तर, अंग्रेजी, इतिहास
निवास – डूंगरपुर (राजस्थान)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष

1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
गणिनी आर्यिका श्री विज्ञाश्री माताजी
जयपुर (2012)

गुरु ही वृक्ष की छाया

गुरु ही वृक्ष की छाया, जो गर्मी से बचाती है।
पथिक कितना थका हरा, चैन की नींद आती है।
पके फल बांटते सबको, नहीं कोई मोल लेते हैं।
धर्म की सीख देते हैं और व्यसनों से बचाते हैं।
गुरु ही वृक्ष की छाया......
गुरु ही ज्ञान की गंगा, लगा कर देख ले डुबकी।
जन्म पल में संवर जायें नहीं है देर एक क्षण की।
बिठाकर हृदय सिहांसन, करो पूजा बहुविधि से।
गुरु की दी हुई युक्ति, मोक्ष पथ पर ले जाती है।
गुरु ही वृक्ष की छाया......

-गुरुभक्त संगीतकार
रमेश नामदेव, शामली

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

पूज्य गुरुदेव के साथ
गणिनी आर्यिका श्री गुरुनंदनी माताजी
टूण्डला (2013)

गुरु समर्पण

दिवाली मन मनाता है,
खुशी के गीत गाता है।
दिगम्बर रूप आता है,
उन्हें इतिहास गाता है।।
दिगम्बर रूप सच्चा है,
उन्हीं को पूजा लो 'सज्जन'
कोई रूठा नहीं उनसे,
मनाना उनको आता है।।

–सज्जन सिंह चौहान
जगदलपुर

पूज्य गुरुदेव के साथ
आर्यिका श्री वर्धस्वनंदनी माताजी
दिल्ली (2015)

धन्य हो गई वहां मां

त्रिवेणी धारा ने, गगन से निहारा है
लगता है जैसे, जगत को संवारा है
धन्य हो गई वह मां, जिसने जन्म दिया था
जन्म देकर फिर, संस्कार दिया था
महका दिया मां ने, जगमगा दिया आसमां
मानों जगा दिया मां ने, जन्म क्या लिया
धरा को बदल दिया, दुनियां के दु:ख ओढ़कर
मानव को जोड़ दिया, धन्य हो गुरु वसुनंदी
आपकी साधना को नमस्कार हो,
आप साक्षात् देवता हो,
आपके चरणों में चमत्कार हो।

–सुमन 'आंचल'
मुरादाबाद

उपाध्याय पद

आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज मुनि
श्री निर्णयसागर जी (वसुनंदी जी) को
17 फरवरी 2002 को विश्वास नगर, दिल्ली
में उपाध्याय पद देते हुए

एलाचार्य पद

आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज
मुनि श्री निर्णयसागर जी (वसुनंदी जी) को
01 अप्रैल 2009 को ग्रीन पार्क,
दिल्ली में एलाचार्य पद देते हुए

सर्वश्रेष्ठ आचार्य श्री ने दिया जैन समाज को सर्वश्रेष्ठ उपहार

प.पू. श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने जैन समाज को नव वर्ष का अदभुत व सर्वश्रेष्ठ उपहार प्रदान किया है। दिनांक 03 जनवरी 2015 को कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली में परम पूज्य राष्ट्र संत, श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने स्व हस्तों से मंत्रोच्चारण पूर्वक विधिवत रूप से आचार्य पद के संस्कार किये।

प.पू. अभीक्षण ज्ञानोपयोगी एलाचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज अपने काल के ज्येष्ठ व सर्वाधिक दीक्षा प्रदाता एलाचार्य रहे हैं जिन्हें अब पूर्ण आचार्य पद से सुशोभित किया गया है।

मुख्य वेदी
अतिशय क्षेत्र जयशांतिसागर निकेतन
मंडौला, गाजियाबाद

नमनकर्ता

डॉ. श्री आनन्द जैन, श्रीमती सीमा जैन
सुपुत्र श्री अनुज जैन, ज्योति कॉलोनी, शाहदरा, दिल्ली

स्व. श्री श्यामसुंदर जैन सुपुत्र श्री सुनील कुमार, अनिल कुमार जैन
पुत्रवधु श्रीमती बालेश जैन (बस वाले) छपरौली, उ.प्र.

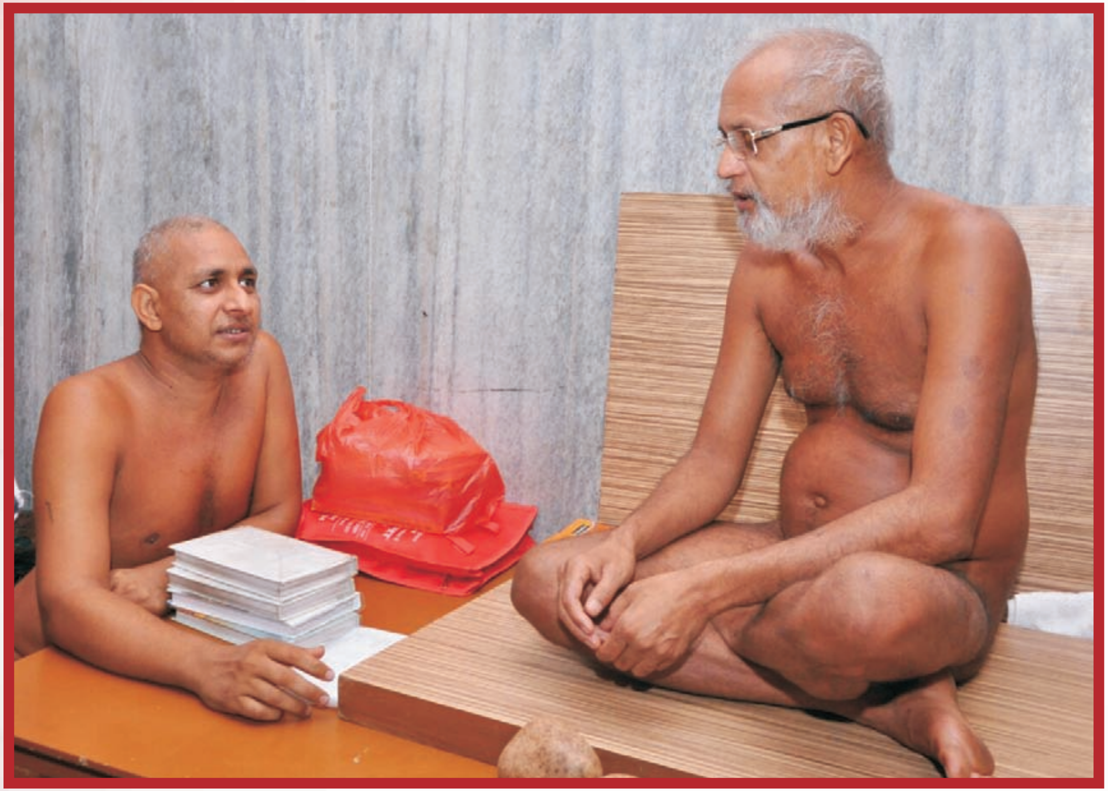

पूज्य गुरुदेव के साथ ऐलक श्री विज्ञानसागर जी महाराज शंकर नगर, दिल्ली में